21.12.67 सतगुरूवार है ओमशांति प्रातःक्लास

पतित–पावन रुहानी बेहद का बाप बैठ समझाते हैं। बच्चे समझते हैं कि बेहद का बाप परमपिता निराकार ही कहेंगे। वो तो पावन ही है। एक को ही याद करते हैं। .....याद करने का पात्र है ही एक। विष्णु को भी याद करने की दरकार नहीं है। बुद्धि से समझा जाता है कि जो ल.ना. थे वो पुनर्जन्म लेकर पतित ही बन चुके हैं। बच्चों की बुद्धि में सारा आदि ,मध्य,अंत का ज्ञान है। बच्चे जानते हैं कि सिवाय पतित–पावन बाप के यह ज्ञान कोई दे ही नहीं सकता है। अभी तुम पुरुषार्थ करते हो मुक्ति–जीवनमुक्ति का। वहां तो मुक्ति से उतर कर जीवनमुक्ति में आते हैं। कौन?ल.ना. सो ही फिर पूरे 84पुनर्जन्म लेते हैं। चक्र को तो अभी समझ गए हो ना। बाप ने समझाया है कि एक तो है ईश्वरीय मत। दूसरी है आसुरी मत। देवताई मत तो कोई दे नहीं सकते। देवतायें हैं ही कहां पर जो कि मत दें?देवताई मत यहां पर मिल नहीं सकती। बाकी तो मानव मत ही कहेंगे। मानव मत से बच्चे समझते हैं कि नीचे ही उतरते आते हैं। फिर जब ईश्वरीय मत मिले तो ही देवता बनें। जेसे यहां पर असुरों की मत चलती है, वैसे ही वहां पर देवताओं की मत चलती है। वहां तो दुःख की बात ही नहीं। शास्त्रों में तो बातें लिख दी हैं कि कृष्ण को कंस का डर था.....। देवताओं को किसी का डर होता ही नहीं। शास्त्रों में तो बातें लिख दी हैं कि कृष्ण को कंस का डर था.....। देवताओं को किसी का डर होता है क्या? नहीं। बाकी शास्त्रों में तो झूठी बातें हैं भक्तिमार्ग की। अभी तो तुम हो ज्ञान मार्ग में। जैसे झाड़ के पत्ते अथाह हैं, वैसे ही भक्ति का भी बहुत पसारा है। ज्ञान तो बीज जितना है। बाप भी है ज्ञान का सागर। ज्ञान का बीज तो थोड़ा होता है। भक्ति तो कितनी अथाह है। अब तुम बच्चों को बीजरूप ज्ञान सागर ने यह ज्ञान दिया है। उनको याद तो सभी करते हैं। कहते हैं कि काश ईश्वर तुमको अच्छी मत देवे जो कि तुम सुधर जाओ। ईश्वर की मत से ऐसे (ल.ना.) सुधरे हैं ना। कितनी इनकी महिमा है। अब बाप समझाते हैं कि बच्चे अपन को आत्मा समझो। अब हमको वापस जाना है। पतित आत्माएं तो जा न सकें। बाप कहते हैं याद से ही तुम्हारे पाप कटेंगे। यह शिक्षा आत्माओं को परमात्मा बाप ही दे सकते हैं। कहते हैं अपन को आत्मा समझो। अब हमको वापस जाना है। पतित आत्माएं तो जा न सकें। बाप कहते हैं याद से ही तुम्हारे पाप कटेंगे। यह शिक्षा आत्माओं को परमात्मा बाप ही दे सकते हैं। कहते हैं अपन को आत्मा समझो ; क्योंकि अभी नंगा ही जाना है। वहां देवताओं को तो ऐसे नहीं कहेंगे नंगे जाना है। उन्हों को तो नीचे उतरना ही है। भिन्न2 नाम–रूप लेना है। नाम बिगर तो कारोबार चल न सके। अनेक आत्माएं अपने शरीर साथ पार्ट बजा रही हैं। अभी सभी का पार्ट खतम होना है। जाना है वापस। बाप राय बहुत अच्छा देते हैं। एक तो कहते हैं पवित्र रहो। बाबा से पूछते हैं बच्चे की शादी करावें?तो बाबा अभी करके डायरैक्शन नहीं देते हैं। समझते हैं चल न सकेंगे। नही ंतो बच्चा अगर पवित्र रहने लिए बाप की आज्ञा न माने तो वह बच्चा बच्चा नहीं ;परंतु इतनी ताकत नहीं है जो श्रीमत पर चले। न चलते तो नाफरमानबरदार ठहरे। बाप तो कहेंगे उनको समझाओ। पवित्र बनो। बाप का कहना न मानता तो वह कपूत बच्चा हो गया। बाबा देखते हैं इनमें इतनी ताकत नहीं है, जो डायरैक्शन देवें। बाबा देखते हैं यह ठहर न सकेंगे। खान–पान के लिए तो बाबा समझाते ही हैं। इसका भी तो असर पड़ता है ना। यहां तो बाप की मत पर एक्युरेट चलना पड़े। बहू के हाथ का भी खाना न है ;परंतु चल न सके। इसलिए बाबा पहले से ही कह देते हैं विघ्न बहुत पड़ेंगे। अबलाओं पर अत्याचार भी होते हैं। बाप तो ऐसे नहीं कहेंगे जो झगड़ा पड़े। यह(बाबा) कितना रॉयल जवाहरी था। भाइयों को भी लखपति बना दिया। पहले तो गरीब थे। साहुकार लोग गरीब पर हाथ रख चढ़ाते हैं। तो भाइयों को भी चढ़ाया। फिर जब देखा पवित्रता की बात तो कितना बिगर(बिगड़) पड़े। बड़ा हंगामा हो गया। यह तो डरा नहीं ;क्योंकि बाप की प्रवेशता थी ना। बाप की डायरैक्शन मिलती है तो श्रीमत पर चलना पड़े। नही ंतो देवता कैसे बनेंगे?जो मत पर नहीं चलते तो फिर पद भी कम हो जाता है। राजधानी स्थापन हो रही है। सभी तो डायरैक्शन पर चल न सके। जो नहीं चलते हैं उनको वफादार ,आज्ञाकारी कह न सकेंगे। ईश्वरी मत पर तो पूरा चलना पड़े ना। हुकुमी हुकुम चलाय रहा। ईश्वर का

हुकुम होता है ना। मानेंगे नही तो उंच पद पा न सकेंगे। बाकी थोड़ा ज्ञान लिया है तो स्वर्ग में आ जावेंगे। बस, खुश हो जाते हैं। यह नहीं समझते हैं स्वर्ग में भी अनेक मर्तबे हैं। बाप जानते हैं कि यह ईश्वरी फरमान पर चल सकते हैं। ताकत नहीं। तो जरूर पद भी ऐसा पावेंगे। स्वर्ग की स्थापना तो एक बाप ही करते हैं। बच्चों को मत देते रहते हैं। तुम ईश्वरी मत से कितना उंच बनते हो। और तो सब लड़ाइयां आदि से राजाई लेते हैं। अच्छा, यह ल.ना. कैसे विश्व के मालिक बने। जरूर सत्यनारायण की कथा सुनी। लड़ाई की तो बात ही नहीं। तो यह बड़ी समझने की बातें हैं। बाप तो समझ जाते हैं यह ज्ञान उठाय सकेंगे या नहीं। चाल–चलन ,बोलने–करने ,खाने–पीने आदि सारी चाल से बाप समझ जाते हैं। मौत तो सर पर खड़ा है। अचानक एक्सीडेंट आदि क्या2 होते रहते हैं। सतयुग में यह बातें होती नहीं। वहां काल खाता नहीं। वह है ही अमरलोक। जो अच्छी रीत समझते हैं वह तो झट पुरुषार्थ करते हैं। कहां बाप की अवज्ञा न हो। अज्ञान काल में तो कोई2 बच्चा ऐसे कपूत होते हैं जो बाप को .....लगा देते हैं। शूट भी कर देते। वहां तो ऐसी बात होती नहीं। यहां है ही आसुरी स्वभाव वाले। वहां हैं दैवी स्वभाव वाले। पारलौकिक बाप के बन गए तो फिर लौकिक को कुछ दे न सके। शादी कराने का भी असर तो पड़ जाता है ना ;क्योंकि हाथ डालते हैं। वह काम चिक्षा पर बैठ आदि,मध्य,अंत दुःख पावेंगे। फिर मां–बाप दोनों फंस पड़ते हैं। यह ज्ञान की बातें बड़ी महीन हैं। थोड़े में ही खुश न होना है। मनुष्यों पास तो करोड़ों रुपये हैं। पदमपति भी हैं। वह सब है अल्पकाल का। तुम तो 21जन्म लिए पदमपति बनते हो। वह तो आज हैं कल अचानक मर जाये फिर क्या होगा? कुछ भी नहीं। इसके लिए सन्यासी कहते हैं काग विष्टा समान सुख है। उन्हों को स्वर्ग के सुखों का पता ही नहीं है। अभी तुम समझते हो सिवाय बाप के मुक्ति–जीवनमुक्ति का रास्ता कोई बताय नहीं सकते। सीढ़ी के चित्र पर कोई समझ जाये तो अहो सौभाग्य। बाप ने समझाया है यहां राजाई स्थापन होती है। राजायें भी नम्बरवार उतरते जावेंगे। थोड़ी देर से आने से दुनियां कुछ तो पुरानी होगी ना। मकान पुराना होता है तो मरम्मत करानी होती है। बच्चे समझते हैं अब हम नई दुनियां में जावेंगे। नई दुनियां सतयुग को कहा जाता हे। उसमें भी 100वर्ष के बाद कहेंगे यह 100वर्ष...पुराना है। लाइफ का तो टाइम लेना चाहिए ना। जाना चाहिए एकदम सतयुग आदि में। इसके लिए पूरा पुरुषार्थ करना चाहिए। अभी तुम यह समझ गए हो आत्माएं नम्बरवार कैसे उतरती हैं। जैसे उतरती हैं वैसे ही वहां जाकर खड़ी हो जावेंगी। जैसे चंद्रमा स्टार आदि भी आकाश तत्व में खड़े हैं ना। किसी आधार पर हैं क्या?वैसे आत्माएं भी महातत्व में खड़ी हो जाती है। जैसे स्टार्स चमकते हैं वैसे निराकारी दुनियां में आत्माएं चमकती हैं। महसूस करते हो हम यह शरीर छोड़ ऐसे जाकर महातत्व में लटकेंगे। आधार कुछ भी नहीं होता। मनुष्यों को इन बातों का कुछ भी पता नहीं है। भल यहां सुनते भी हैं ;परंतु बहुत हैं जिनको कुछ भी धारणा नहीं होती। कुछ भी समझते नहीं। उनके लिए जैसे यह फ्रेंच बोली है। भक्तिमार्ग वाले भी तुम्हारे पास ऐसे आवेंगे। कुछ भी समझेंगे नहीं। भक्ति ही याद आती रहेगी ;क्योंकि उनमें भभका है। इसमें तो शांत रहना पड़ता है। अपने बाप को याद करना है। स्वधर्म में टिकना है। आत्मा का स्वधर्म शांत। अब शांतिधाम तो वह ठहरा ना। यहां तो शांति होती नहीं। यहां तो कर्म करना पड़ता है। सतयुग में तुम्हारा विकर्म नहीं बनता ;क्योंकि रावण नहीं है। देहअभिमान होता नहीं। यहां तो देहाभिमान में आकर कैसे उल्टे–सुल्टे काम करते हैं। यह नालेज है। इसमें एक तो पवित्र भी रहना पड़े। कोई तो भल पवित्र भी रहते हैं ; परंतु नालेज बुद्धि में बैठती नहीं जो समझा सकें। कुमारियां हैं ,पवित्र तो हैं ,कोई की बुद्धि में बिल्कुल बैठता ही नहीं। नम्बरवार दर्जे तो होते हैं ना। बाप से आकर मिलते हैं तो बाबा समझ जाते हैं यह साधारण बच्चा है। बुद्धि इतनी चमत्कारी नहीं है। तो पद भी ऐसे ही पावेंगे साधारण। बाप कहते हैं कोई भी अपवित्र का काम कायदे के

विरुद्ध न करना है। बुद्धि में याद रखो हमको तो अब वापस जाना है। 84का चक्र पूरा हुआ। शरीर भी पुराना है। हम आत्मा जैसे नंगे आये थे अब वैसे ही नंगे जाना है। पावन बनना है योगबल से। न बनेंगे तो फिर सजा खानी पड़ती है। इस समय सबकी वाणप्रस्थ अवस्था है। भक्तिमार्ग में पुरुषार्थ करने वाले जीवनमुक्तिधाम जा न सके। पतित–पावन सदगति दाता वह बाप ही है। यह तो अभी है रौरव नर्क। बच्चे को शादी करवाना माना रौरव नर्क में ढकेलना है। समझना है इसमें हम मदद करता हूं यह पाप चढ़ता है। पापात्मा बन जाता हूं। बुद्धि ये काम कर लेना चाहिए। मुरली में खबरदार रहने की तो सब बातें आती हैं। कोई पाप किया तो वह सौणा हो जाता है। ज्ञान में आकर कोई ऐसा पाप करे ,बच्चे को खुश करने तो दोष आ जाता है। यह है किसको खून करना। बुद्धि में नहीं आता है काम कटारी से तो एक/दो का खून करेंगे। इसमें बहुत सहन भी करना पड़ता है। बाप सुनते हैं तो बाप को तरस भी आता है। औरों को भी सावधान करने बाबा समझाते हैं। अपने हाथों से बच्चों को खून न करना। बाबा से पूछेंगे तो बाबा कहेंगे भल कराओ। ज्ञानवान खुद समझते हैं और समझ भी सकते हैं। वह कब पूछेंगे नहीं। बच्चियों की तो शादी करानी ही है। आपे ही जाकर डूबते हैं तो उनको तो कराना ही पड़े। बच्चा तो भल खराब हो जाये। उनका खयाल नहीं रहेगा। मंज़िल है बड़ी उंची। टीचर को स्टुडेंट अच्छे वही लगेंगे जो अच्छे मार्क्स से पास होते हैं। बहुत स्टुडेंट फेल हो गये तो आबरू ही चली जाये। यह तो बाप कहते हैं मैं कल्प2 आकर बच्चों को समझाता हूं। कल्प2 पुरुषार्थ अनुसार जो पद पाया है वह ही पावेंगे। बाप समझाय देते हैं कोई भी पाप न करना। नही ंतो दंड चढ़ता ही रहेगा। मंजिल है, बहुत है जो कुछ भी समझते नहीं। जैसे पिंजरे में आय फंसे हैं। कितने आश्चर्यवत कथंती,सुनंती ,भागन्ती हो गए। माया के पास जाते हैं तो माया खातरी बहुत करती है। जैसे हिंदू से क्रिश्चियन बनते हैं तो वह खातरी करते हैं ना। यह भी माया के बनते हैं तो माया सुख बहुत देती है। माया भी कम थोड़े ही है। बड़ी शक्तिवान है। बाप को आलमाइटी कहते हैं ;परंतु माया भी ऑलामाइटी है। एकदम रौरव नर्क में ढकेल देती है। वह भी कम शक्तिवान नहीं। मैं इनसे सर्वशक्तिवान हूं। वह मेरे से शक्तिवान है। माया के तरफ जाने से वह जैसे रावण धर्म के बन जाते हैं। तुम इस वर्ष में कितना सुख उठाते हो। तुम्हारे कितनी खातिरी होती है। तो बाप समझाते हैं ऐसी भूलें मत करो। पद भ्रष्ट हो जावेगा। अच्छे बच्चे बहुत मेहनत करते हैं सर्विस में। समझाते2 गला ही घुट जाता है। तभी भी सर्विस को छोड़ते नहीं। हमको तो सर्विस कर भारत को स्वर्ग तो बनाना ही है। यह बाबा ने ड्यूटी दी है। बेसमझ को बाप कितना समझदार बनाते हैं। उनके श्रीमत से कितना उंच बनना है। टाइम है बाकी थोड़ा। विनाश के समय तो ज्ञान उठाय न सकेंगे। .....आदि में ही मूंझ पड़ती। जो पक्के होते हैं उनके लिए मिरुआ मौत मलूका शिकार। सर्विसेबुबल बच्चे ही बाबा को याद पड़ते हैं जो बहुतों को आप समान बनाते हैं उनको ही अतिइंद्रिय सुख रहता है। कोई भी मित्र–सम्बंधी आदि याद नहीं पड़ते। आप मुये मर गई दुनियां। बाबा को फालो करने वाले कब दुनियावी बातें पूछें भी नहीं। बाबा समझ जाते हैं उनकी लागत है। बाप समझाते तो बहुत सहज हैं। नर्कवासी से स्वर्गवासी बनना है। नर्कवासी से फिर दिल बिल्कुल हट जाती है। कोई तो और ही बहुत सम्बंध जुटाय देते हैं। बहुत फर्क रहता है। बाबा से पूछे तो बाबा झट बतावेंगे इस हालत में तुम्हारा शरीर छूट जाये तो साधारण प्रजा में जावेंगे। बाप समझ जाते हैं यह सीढ़ी चढ़ न सके। तुमको याद करना है शिवबाबा को। घर को भी याद नहीं करना है। घर में जो बाप रहते हैं उनको याद करना है। घर ब्रह्म तत्व को सन्यासी याद करते हैं। तुमको तो शिवबाबा को याद करना है। दूसरा न कोई। मेहनत करते रहें तब वह अवस्था हो। अच्छा, मीठे2 सिकीलधे बच्चों प्रति रुहानी बाप व दादा का यादप्यार गुडमार्निंग और नमस्ते। नमस्ते। ओम।